सुनहरा लॉकेट

सुनहरा लॉकेट

“ओह, कितना सुंदर है!” मिस टिबैरी ने कहा, जब उसकी बिल्ली को सेब के पेड़ के नीचे एक सुनहरा लॉकेट मिला. ज़ीनिया के पौधों से घासपात निकालने के बजाय वह सारा दिन उस लॉकेट को अलग-अलग पोशाकों के साथ पहनती रही. फिर इस भय से कि कहीं चोर उस लॉकेट को चुरा न लें, वह रात भर जागती रही. ‘यह लॉकेट तो मुसीबत बन गया है,’ ऐसा सोच, मिस टिबैरी ने लॉकेट किसी को दे दिया. पर बदले में उसे तीन कुलबुलाते कुत्ते के पिल्ले मिल गये. उसने पिल्ले भी दे दिए तो उसे चीखता हुआ तोता मिला गया. उसने तोता दे दिया तो उसे चितकबरा घोड़ा मिला गया. इस प्रकार हर दिन कोई नयी वस्तु उसे मिली. मिस टिबैरी इसी सोच में हैं कि ज़ीनिया पौधों के घास-पतवार हटाने की बात तो दूर की है, क्या अब वह कभी अच्छी नींद सो पायेगी!

सारी गलती बिल्ली की थी.

वर्षों से मिस टिबैरी दो नगरों के बीच में स्थित पत्थरों के बने अपने छोटे से घर में शांतिपूर्वक रह रही थी. घर के सामने फूल लगे थे और पिछली तरफ सब्ज़ियाँ लगी थीं. घर के एक ओर बने कूएँ से साफ़, निर्मल पानी मिलता था और दूसरी और लगे सेब के पेड़ से फल और छाया मिलती थी.

मिस टिबैरी के पास वह सब था जो वह चाहती थी और जिसकी उसे आवश्यकता थी.

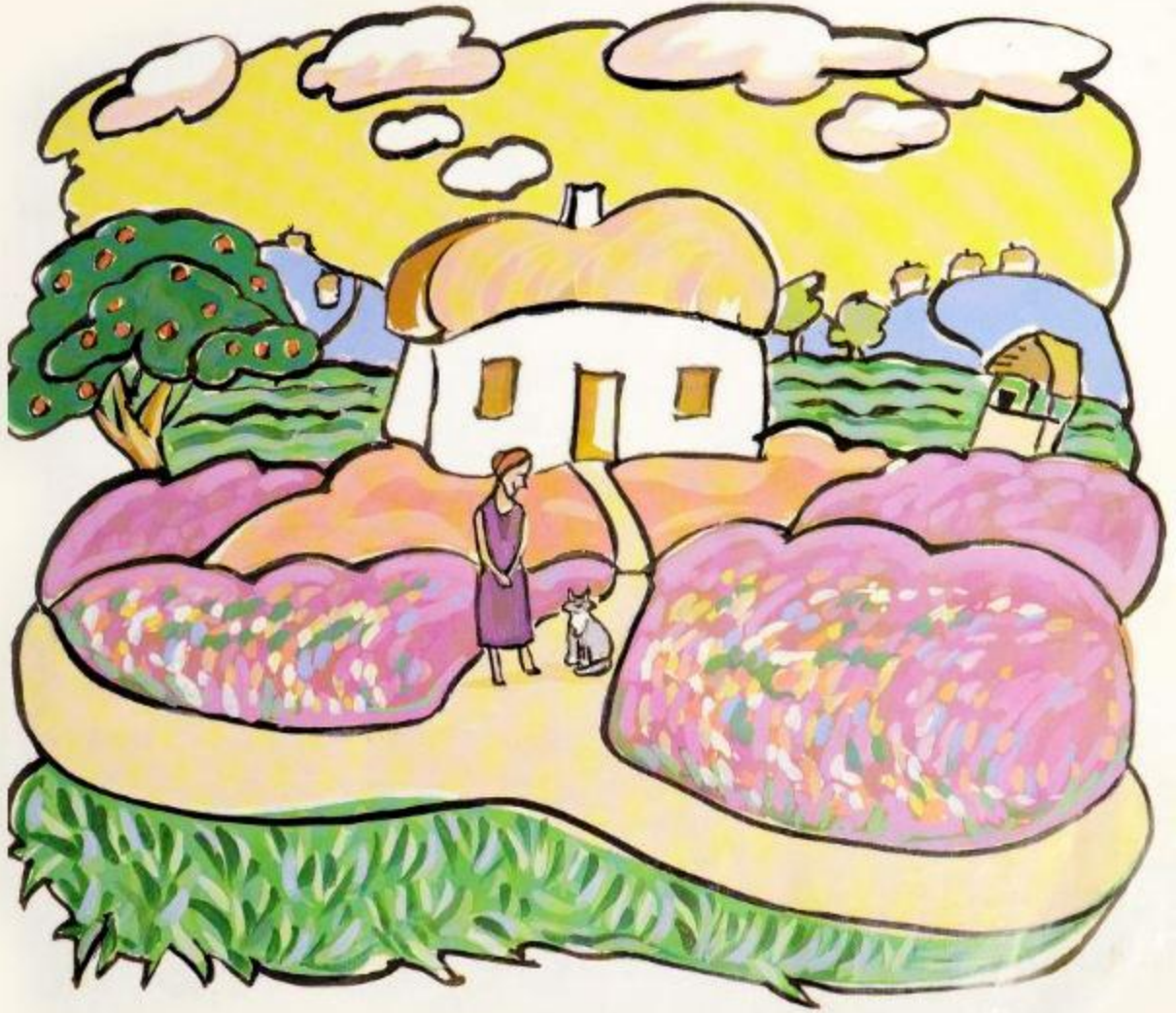

फिर एक दिन उसकी बिल्ली को लगा कि सेब के पेड़ के नीचे एक चूहा छिपा था. बिल्ली ने मिटटी खोदनी शुरू की और खोदती गई. उसे चूहा नहीं मिला. लेकिन उसे एक सुनहरा लॉकेट मिल गया.

मिस टिबैरी ने घर के सामने लगे ज़ीनिया के पौधों से घास-पतवार हटाने शुरू किये ही थे कि बिल्ली लॉकेट उठा कर मिस टिबैरी के पास ले आई.

'हेलो पस्स, क्या लेकर आई हो?' मिस टिबैरी ने पूछा. उसने बिल्ली से लॉकेट ले लिया. 'ओह, यह तो कितना सुंदर है!'

मिस टिबैरी झटपट घर के भीतर आई और लॉकेट पहन लिया. उसकी साधारण-सी पोशाक के साथ वह अच्छा न लग रहा था.

एक-एक कर उसने अपनी सारी पोशाकें पहनी. पर किसी भी पोशाक के साथ लॉकेट मेल न खा रहा था.

'क्या मुसीबत है!' मिस टिबैरी बोली. 'मेरे पास इतनी सुंदर पोशाक ही नहीं है जिस के साथ यह लॉकेट पहना जा सके. और अलग-अलग पोशाकें पहनने में मैंने पूरा दिन गँवा दिया जबकि मुझे ज़ीनिया के पौधों से आज घासपात हटाने थे.'

उसने लॉकेट मेज़ पर रख दिया और अपने लिये खाना बनाने लगी. फिर वह सोने के लिये बिस्तर पर लेट गयी. उसे नींद आई ही थी कि एक विचार उसके मन में उठा.

'क्या मुसीबत है!' मिस टिबैरी बोली. 'लॉकेट तो मैं मेज़ पर ही छोड़ आई हूँ. अगर कोई चोर भीतर आकर उसे चुरा कर ले गया तो?'

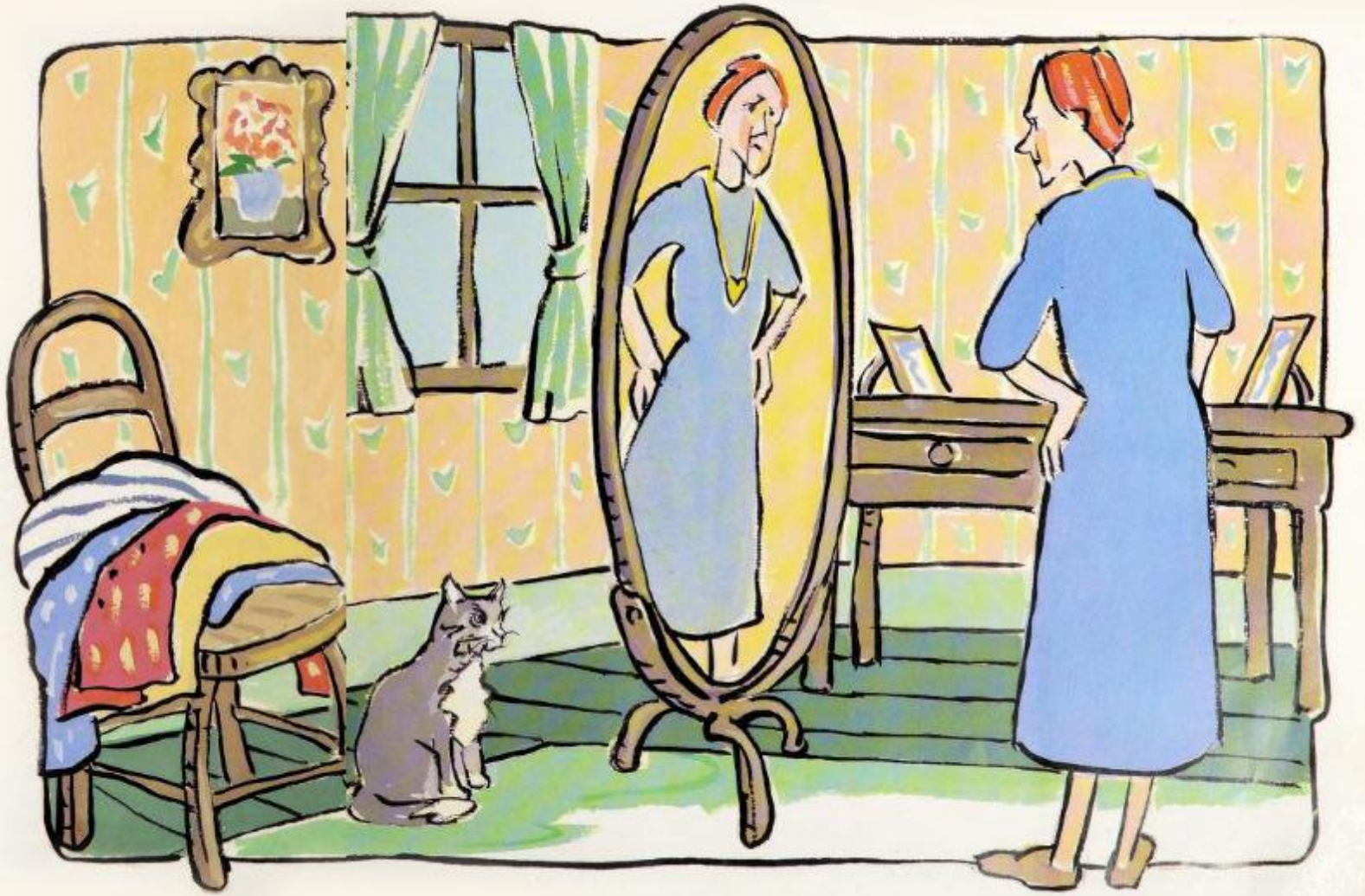

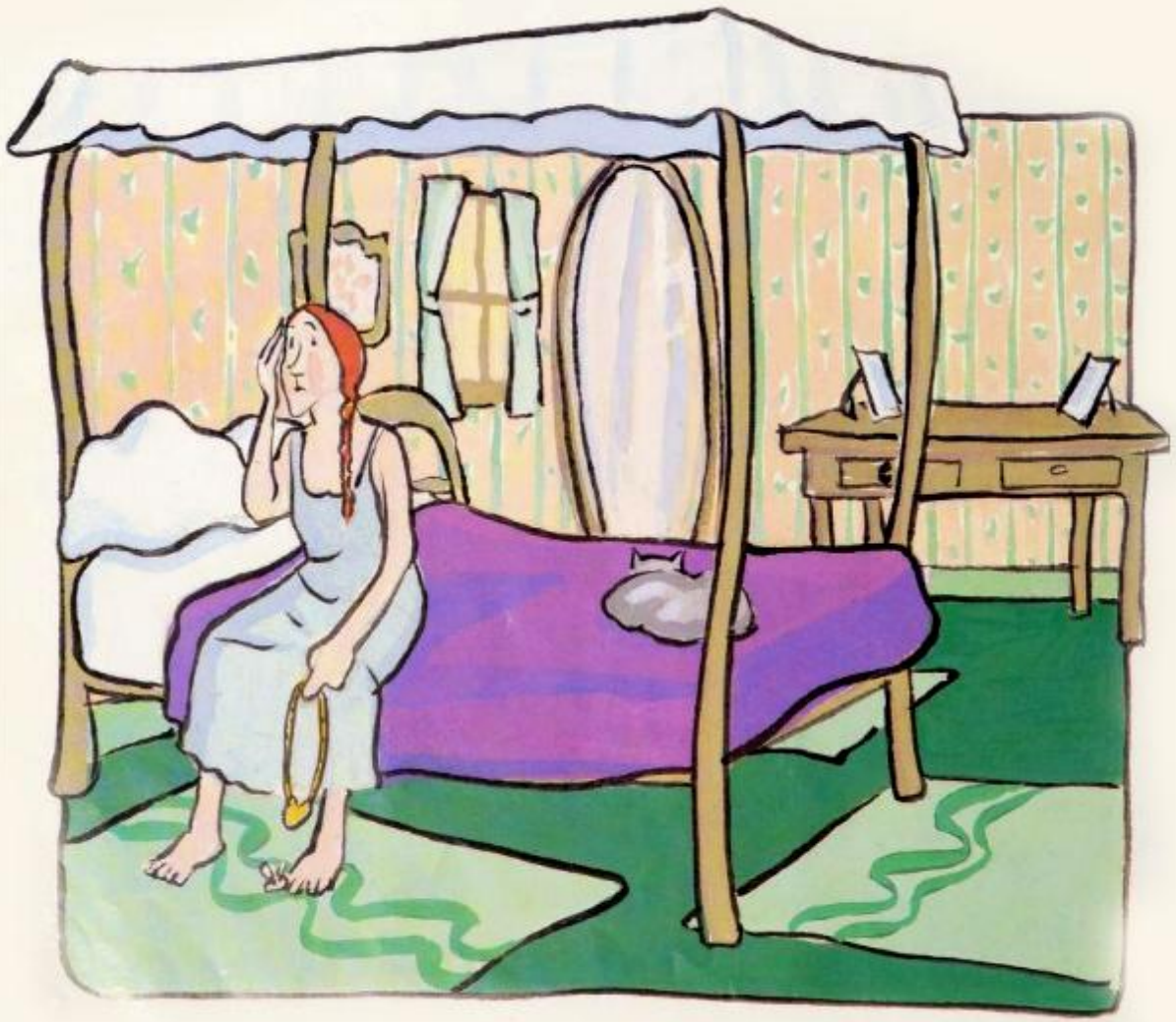

वह कूद कर बिस्तर से बाहर आ गई और मेज़ की ओर झटपट चल दी. हड़बड़ी में उसका पाँव किसी चीज़ से टकरा गया और अंगूठे को चोट लग गयी. लेकिन लॉकेट मेज़ पर सही सलामत मिला.

उसे उठा कर मिस टिबैरी बिस्तर पर वापस आ गई. रास्ते में उसका सिर किसी चीज़ से टकरा गया.

'यहीं ठीक है,' मिस टिबैरी बोली और लॉकेट अपने सिरहाने के नीचे रख दिया. 'यहाँ तुम अवश्य ही सुरक्षित रहोगे.'

उसे नींद आई ही थी कि एक और विचार उसके मन में उठा. उसके सोते हुए अगर चोर बेडरूम के अंदर आ गया और लॉकेट चुरा कर ले गया तो? उसे बिल्कुल अच्छा न लगेगा.

'क्या मुसीबत है!' मिस टिबैरी ने कहा. 'अब मुझे सारी रात जागना पड़ेगा.'

अगली सुबह मिस टिबैरी बहुत थकी हुई थी और बहुत दुःखी थी. उसके पाँव के अंगूठे और सिर में दर्द हो रहा था.

'यह लॉकेट तो एक मुसीबत है,' उसने कहा. 'मुझे यह लॉकेट नहीं चाहिये, न ही मुझे इसकी आवश्यकता है. मैं इसे किसी को दे दूंगी.'

तभी दूध-वाले की गाड़ी उसके घर के सामने रुकी. मिस टिबैरी झटपट बाहर आई.

‘क्षमा करो.’ उसने कहा. ‘क्या तुम किसी ऐसी सुंदर लड़की को जानते हो जिसे सुनहरा लॉकेट चाहिये?’

दूध-वाले ने कुछ पल सोचा.

‘उधर बाईं ओर जो नगर है वहां एक सुंदर लड़की रहती है,’ उसने कहा. ‘मेरे ख्याल में उसके पास कोई लॉकेट नहीं है.’

‘बहुत बढ़िया,’ मिस टिबैरी बोली. ‘तुम इस लॉकेट को उसके पास ले जाओ. लेकिन उसे यह न बताना कि यह लॉकेट मैंने दिया है. वह मुझे धन्यवाद देना चाहेगी और वह मुझे अच्छा न लगेगा. इतना कहना....की यह उपहार उसके एक गुप्त प्रशंसक ने दिया है.’

‘ठीक है.’ दूध-वाले ने कहा. वह चला गया और मिस टिबैरी देर तक सोने के लिए भीतर आ गई.

अगली सुबह दूध-वाला फिर घर के सामने रुका.
'उस सुंदर लड़की को लॉकेट बहुत अच्छा लगा,'
उसने मिस टिबैरी को बताया. 'वह इतनी प्रसन्न हुई कि अपने
गुप्त प्रशंसक को लॉकेट के बदले में एक उपहार देना चाहती थी.
यह है वह उपहार.'
उसने ज़मीन पर एक बड़ा टोकरा रखा और वहां से चला गया.
'यह अच्छी नस्ल के हैं और बहुत मूल्यवान हैं,' जाते-जाते उसने
मुड़ कर कहा.
मिस टिबैरी ने टोकरी खोली. भीतर तीन कुलबुलाते कुत्ते के पिल्ले
थे. 'ओह नहीं,' मिस टिबैरी ने कहा.
सारा दिन उन पिल्लों को ज़ीनिया के पौधों को खोदने से वह
रोकती रही. सारी रात उन पिल्लों को फर्नीचर को चबाने
से वह रोकती रही.

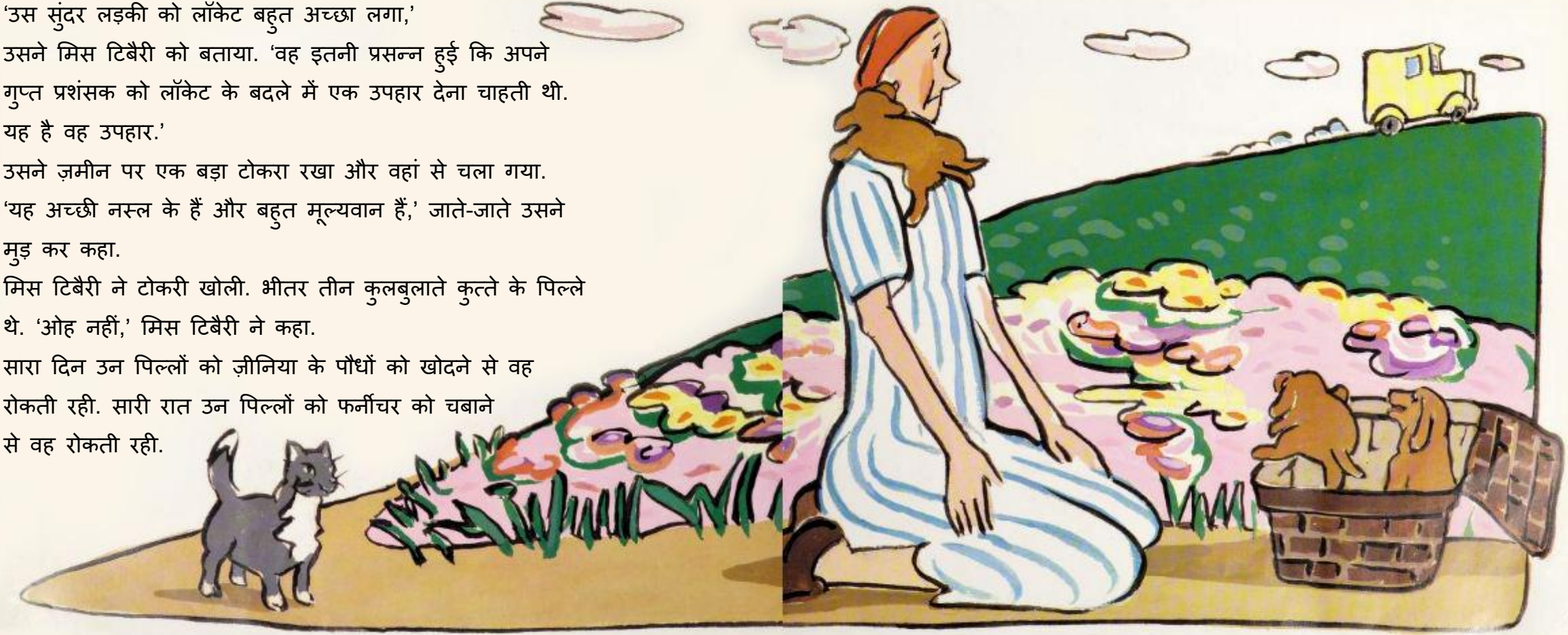

अगली सुबह वह बहुत थकी हुई थी और बहुत दुःखी थी.

'प्लीज़ रुको!' उसने पुकार कर दूध-वाले से कहा, हालांकि उस दिन उसे दूध नहीं लेना था. 'क्या तुम किसी सजीले युवक को जानते हो जो तीन कुलबुलाते पिल्ले लेना चाहता हो.'

दूध-वाले ने कुछ पल सोचा.

'उधर दायीं ओर जो नगर है वहां एक सजीला युवक रहता है,' उसने कहा. 'मुझे नहीं लगता कि उसके पास कोई पिल्ले हैं.'

'बहुत बढ़िया,' मिस टिबैरी बोली. 'तुम इन पिल्लों को उसके पास ले जाना. उसे कहना कि यह उसके एक गुप्त प्रशंसक का उपहार है.'

'ठीक है,' दूध-वाले ने कहा. वह चला गया और मिस टिबैरी देर तक सोने के लिये भीतर चली गई.

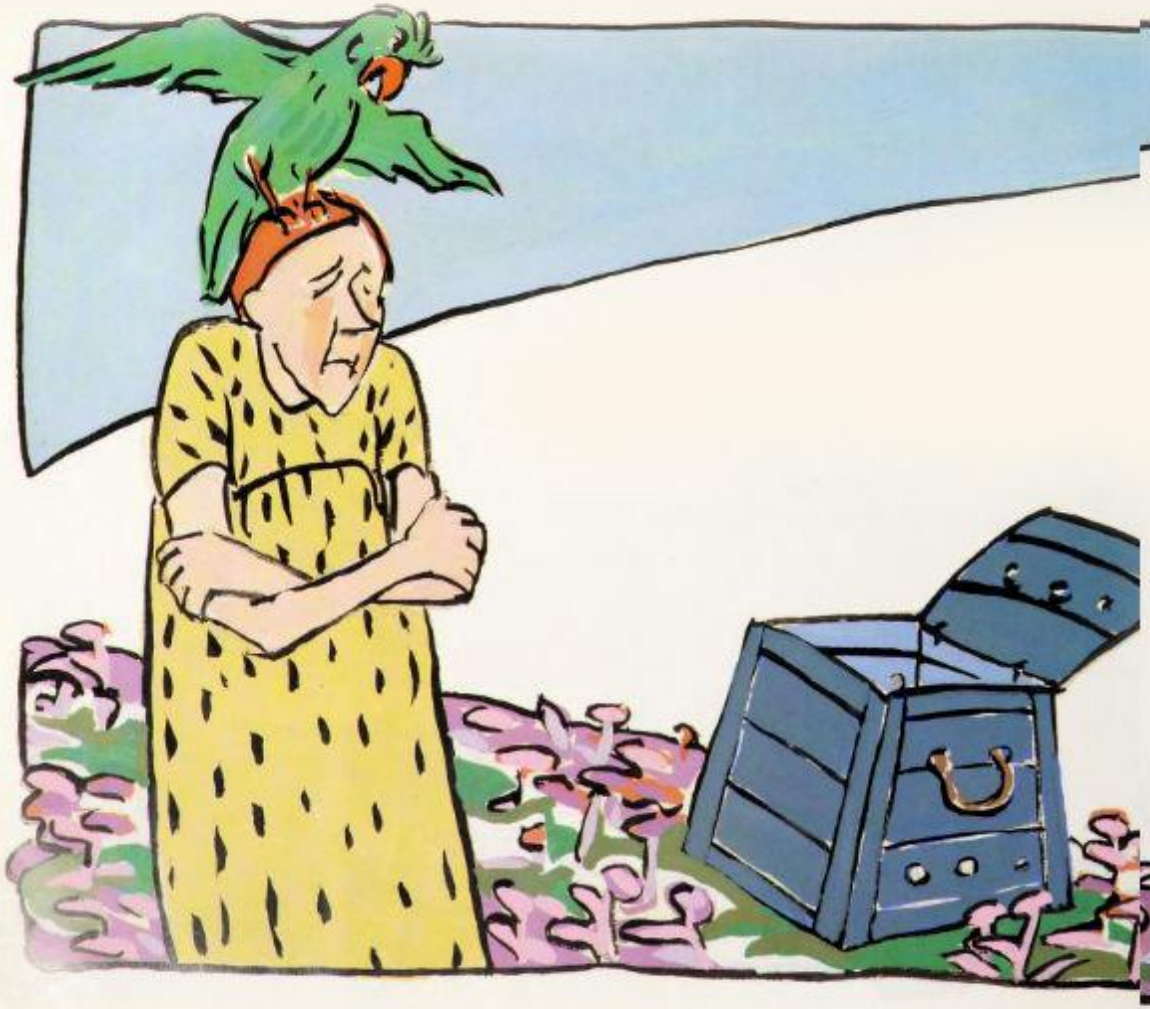

अगली सुबह दूध-वाला एक बड़ा सा डिब्बा लिये हुए आया.
डिब्बे के अंदर एक चीखने वाला तोता था.
'यह एक उपहार है,' दूध-वाले ने कहा. 'उस सजीले युवक
की ओर से उसके गुप्त प्रशंसक के लिए.'
'अरे नहीं,' मिस टिबैरी ने कहा.
सारा दिन तोता उसके साथ आँख-मिचौली खेलता रहा.
सारी रात वह गाता रहा. वह अच्छा नहीं गाता था.

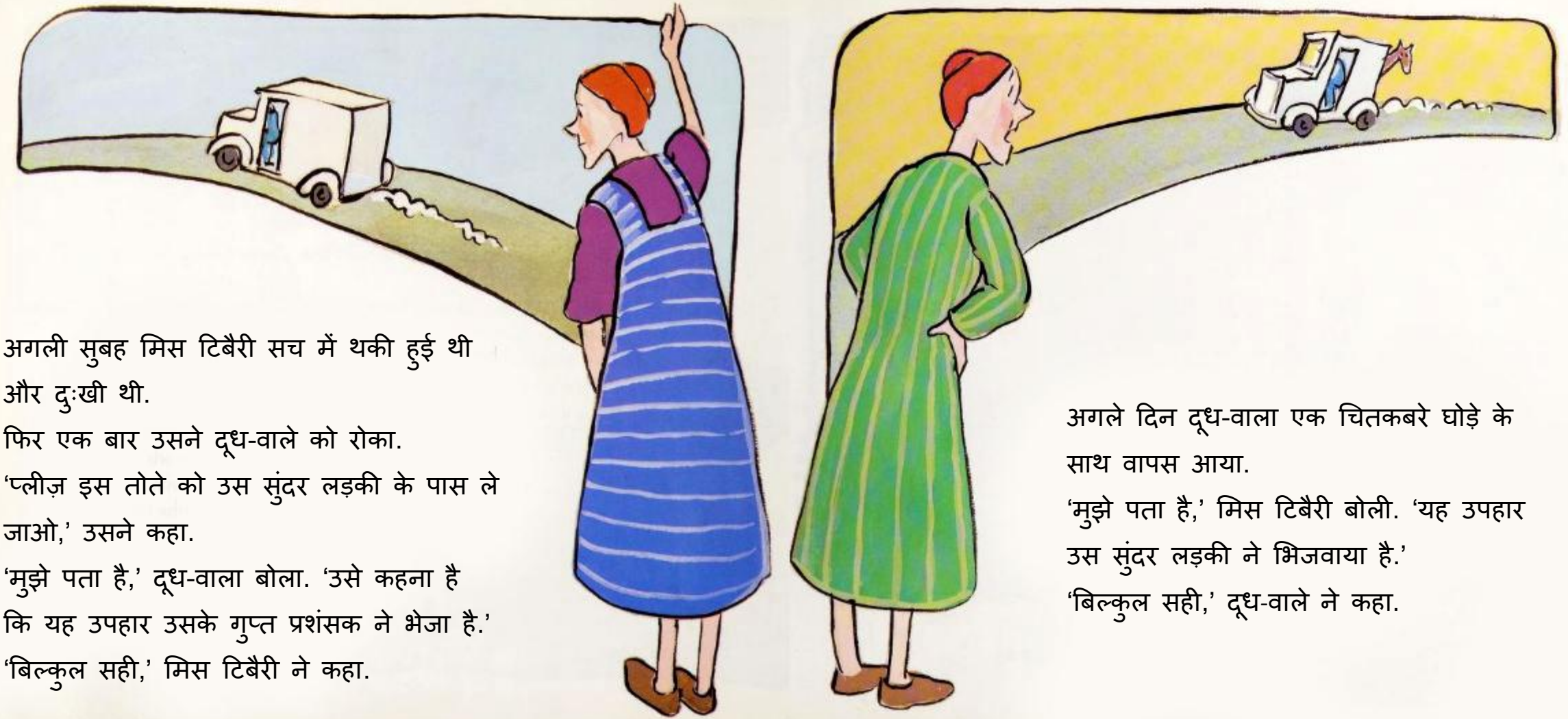

अगली सुबह मिस टिबैरी सच में थकी हुई थी और दुःखी थी.
फिर एक बार उसने दूध-वाले को रोका.
'प्लीज़ इस तोते को उस सुंदर लड़की के पास ले जाओ,' उसने कहा.
'मुझे पता है,' दूध-वाला बोला. 'उसे कहना है कि यह उपहार उसके गुप्त प्रशंसक ने भेजा है.'
'बिल्कुल सही,' मिस टिबैरी ने कहा.

अगले दिन दूध-वाला एक चितकबरे घोड़े के साथ वापस आया.
'मुझे पता है,' मिस टिबैरी बोली. 'यह उपहार उस सुंदर लड़की ने भिजवाया है.'
'बिल्कुल सही,' दूध-वाले ने कहा.

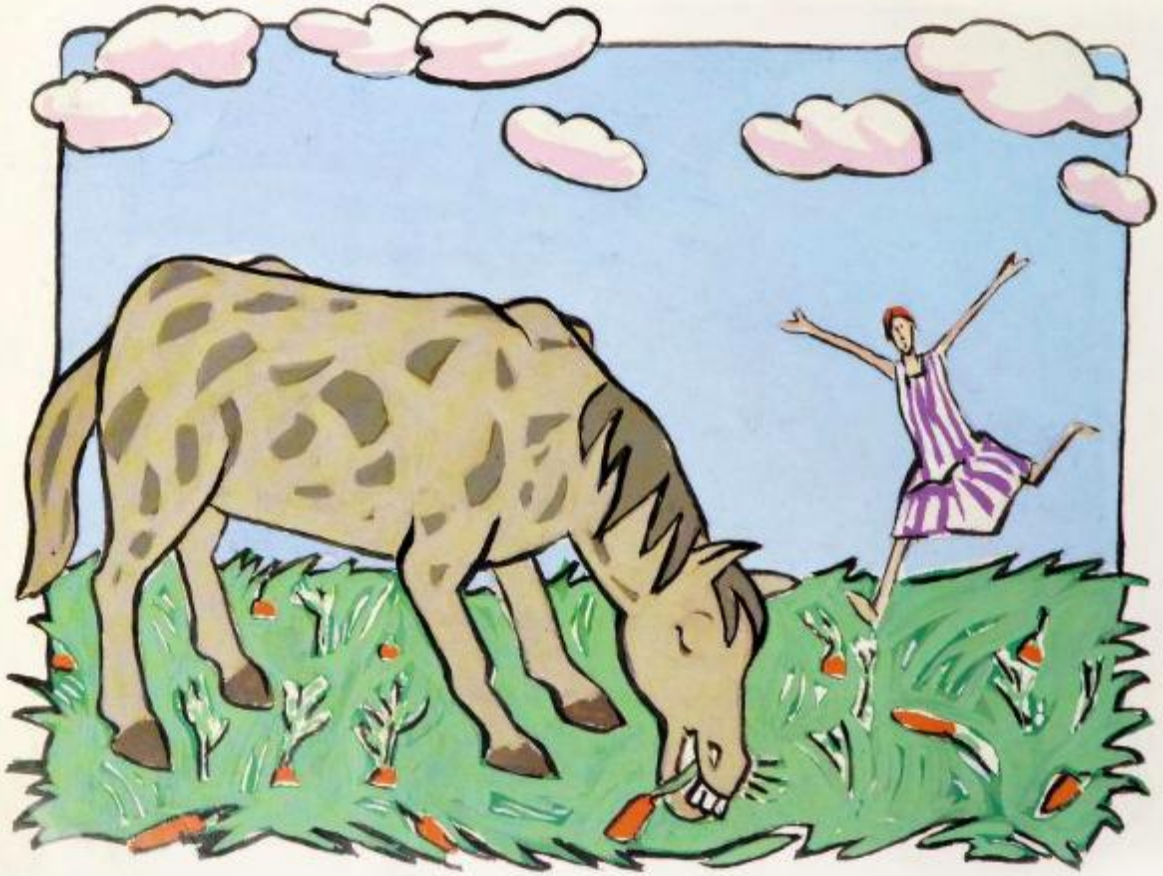

उस दिन घोड़ा उसकी गाजरों के सारे पत्ते खा गया.

उस रात घोड़ा उसके पेड़ के सारे सेब खा गया.
मिस टिबैरी सारी रात उसे सेब चबाते सुनती रही.

सुबह उसने घोड़े को दूध-वाले के साथ
सजीले युवक के पास भेज दिया.

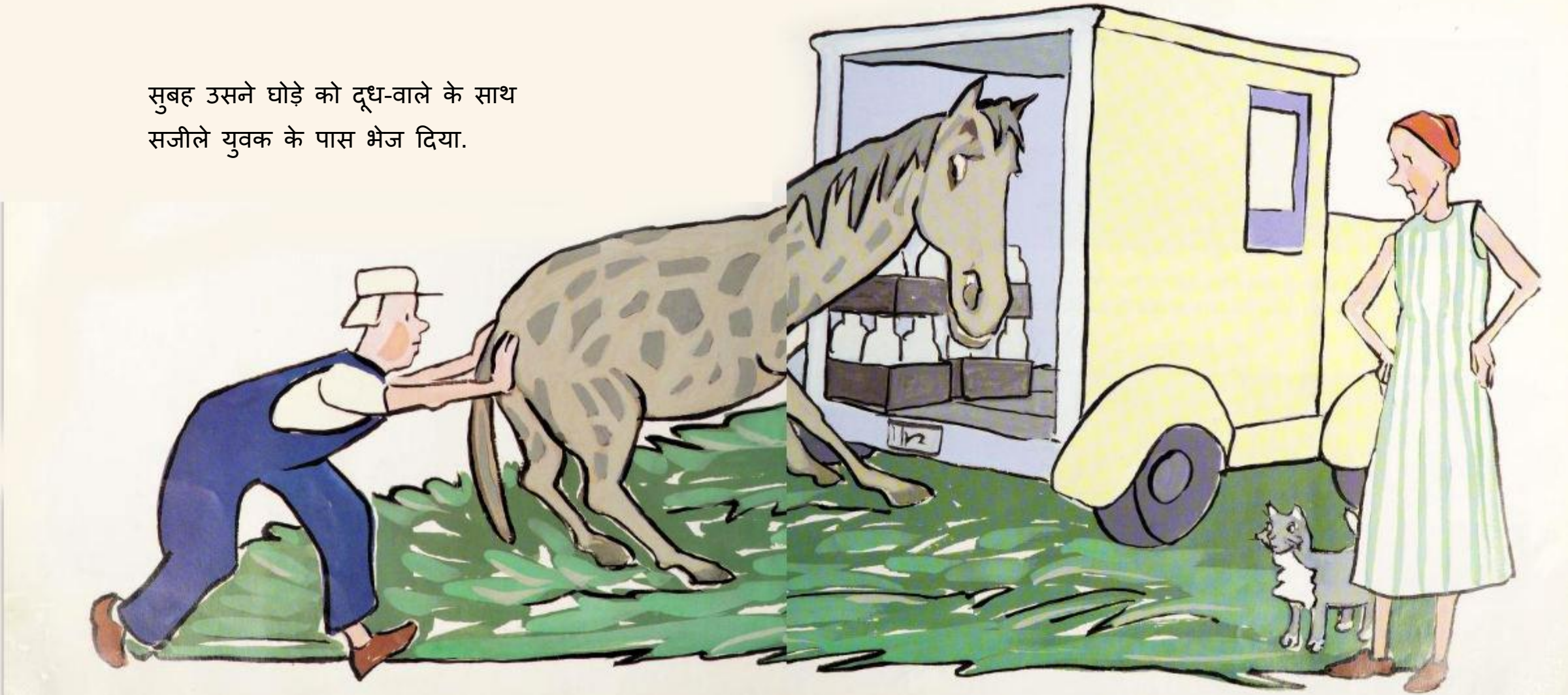

कई दिनों तक यह सिलसिला ऐसे ही चला.

सजीले युवक ने तीन नटखट मेमने भेजे.

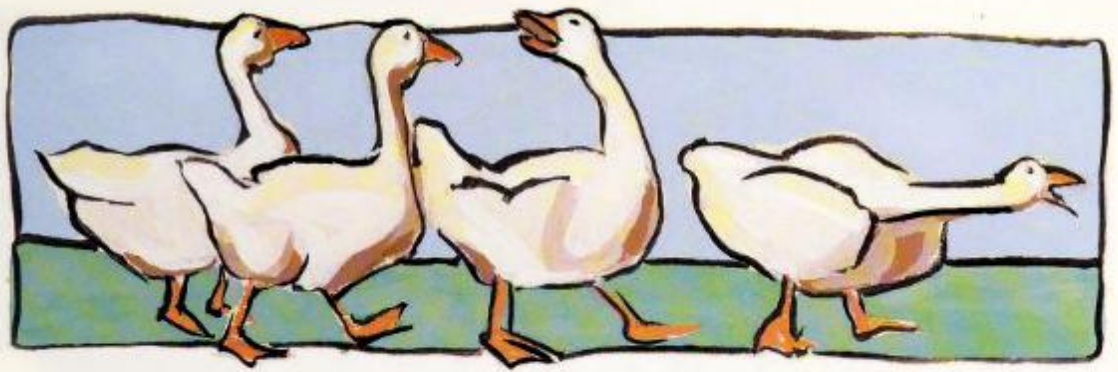

सजीले युवक ने हंसों का एक झुंड भेजा.

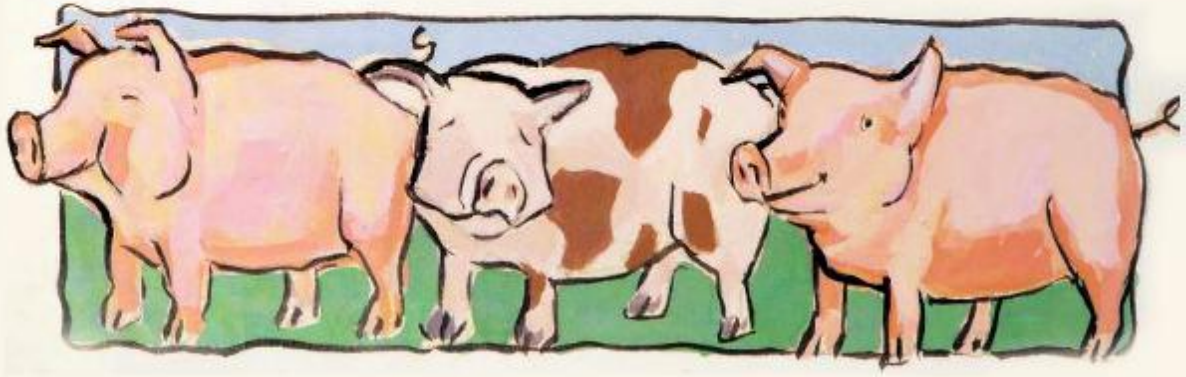

सुंदर लड़की ने तीन मोटे-ताज़े सूअर भेजे.

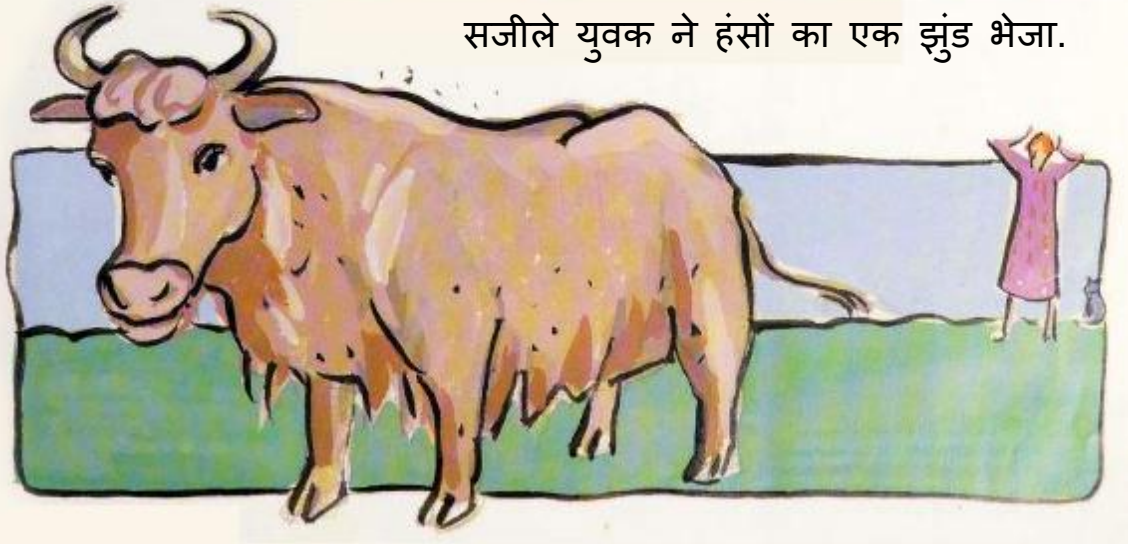

सुंदर लड़की ने एक बैल भेजा, जिसके बालों में पिस्सू थे.

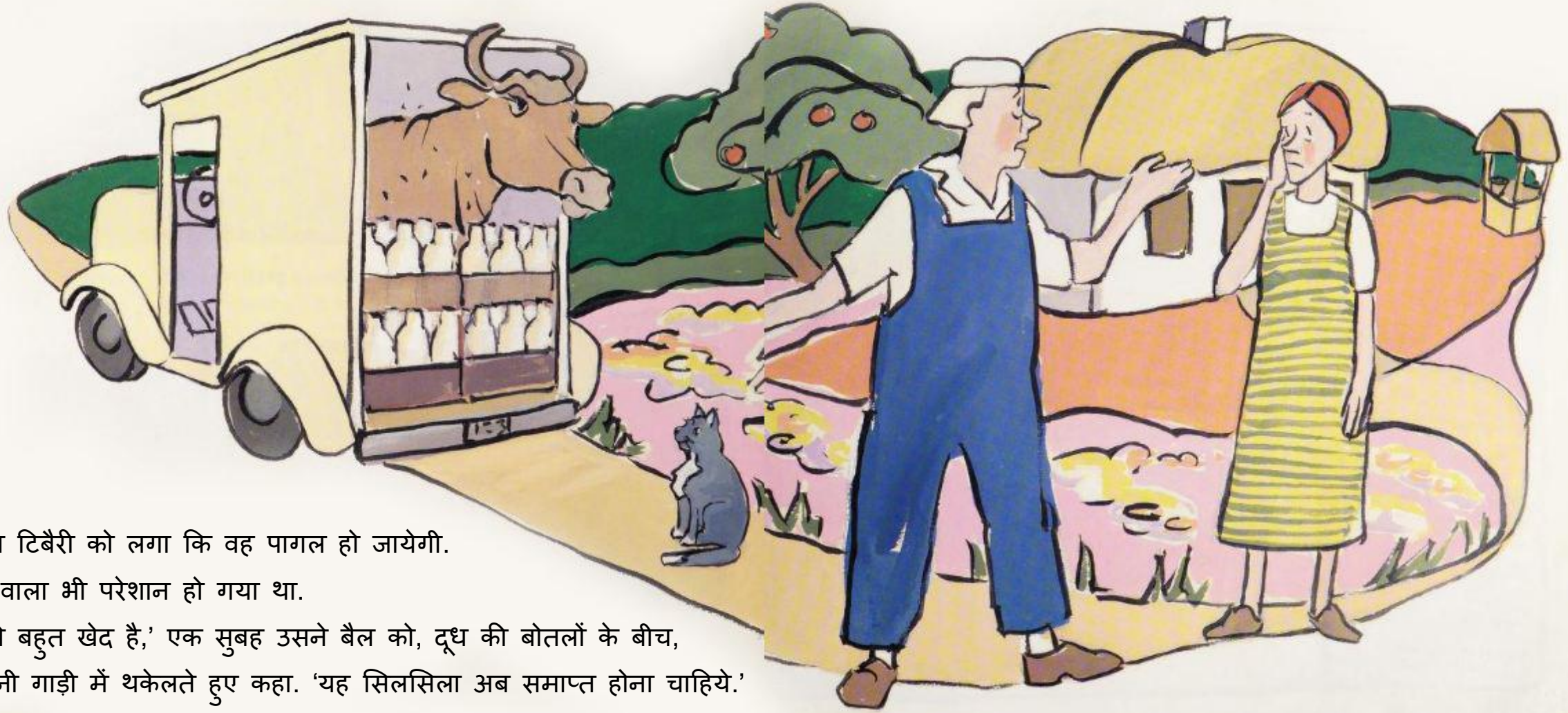

मिस टिबैरी को लगा कि वह पागल हो जायेगी.

दूध-वाला भी परेशान हो गया था.

‘मुझे बहुत खेद है,’ एक सुबह उसने बैल को, दूध की बोतलों के बीच,
अपनी गाड़ी में थकेलते हुए कहा. ‘यह सिलसिला अब समाप्त होना चाहिये.’

'मैं सहमत हूँ,' मिस टिबैरी ने कहा. 'तुम बैल को ले जाओ और मैं कोई उपाय सोचती हूँ.' लेकिन वह इतनी थक चुकी थी कि उसके लिये कुछ भी सोचना संभव न था. फिर भी प्रयास करके उसने अपनी आँखें तब तक खुली रखीं जब तक उसे कोई युक्ति नहीं सूझ गयी. फिर वह देर तक आराम से सोयी. अगली सुबह उसने दूध-वाले को दो पत्र दिए. एक पत्र सुंदर लड़की के लिए था जो बाई ओर स्थित नगर में रहती थी. दूसरा पत्र सजीले युवक के लिये था जो दाई और स्थित नगर में रहता था. दोनों पत्रों में एक ही बात लिखी थी:

प्लीज़ आज रात नौ बजे, दो नगरों के बीच स्थित, पत्थरों के बने छोटे से घर के निकट लगे सेब के पेड़ के पास मिलो.

गुप्त प्रशंसक.

नौ बज गये और मिस टिबैरी, अपने घर के एक कोने की आड़ ले कर, सेब के पेड़ की ओर झाँकने लगी. वह दोनों वहीं थे- सुंदर लड़की और सजीला युवक. उसी पल दोनों को एक-दूसरे से प्यार हो गया.

मिस टिबैरी विवाह में सम्मिलित नहीं हुई. वह घर में ही रही और ज़ीनिया के पौधों से उसने घास-पात हटाये.

लेकिन दूध-वाले ने विवाह में भाग लिया और उसने खूब मज़े किये.

बिल्ली ने भी मज़े किये.

समाप्त